राजयोग ः फरिश्ता स्थिती को प्राप्त करने का परमात्मा शिवपिता का पवित्र विज्ञान

प्रस्तावना ः

ओम शान्ति । आज सारा संसार भारत का प्राचीन राजयोग सिखने की चाहना रखता है क्युंकी आज दुनिया की जो हालत है वह देखकर सभी को लग रहा की सम्पुर्ण मानवजाती को पतन से उत्थान की तरफ ले जाने का कार्य सिर्फ और सिर्फ भारत का प्राचीन राजयोग ही कर सकता है । लेकिन भारत में योग की बहुत सारी पध्दतीया प्रचलित है । इसी कारण सारा संसार मुँझा हुआ है कि हम योग की कौनसी पध्दती को अपनायें जिससे हमारे में सम्पुर्ण परिवर्तन आकर यह दुनिया एक सुखमय स्वर्णिम दुनिया बन जाए । तो आइए हम यह जानेंगे कि भारतीय योग की ऐसी कौनसी सर्वश्रेष्ठ पध्दती है । जिसको अपनाकर हम मनुष्य आत्मायें अपनी सर्वोच्च अवस्था को प्राप्त कर सकते है । इस योग की विधि को जानने के लिए हमें योग और योगा में क्या भेद है यह जानना होगा ।

आज सारा संसार योग के नाम पर योगा माना हठयोग का अभ्यास कर रहा है । योग यह आत्मासे तो योगा यह शरीर से संबंधित है इसीलिए योगा से सर्वोच्च आध्यात्मिक अवस्था को नहीं पाया जा सकता । सिर्फ इससे शारिरीक और बहुत थोडी मात्रा में मानसिक उन्नती होती है । दुनियाभर में आजतक सिखायी गयी योग की सारी पध्दतीया मनुष्यों ने मनुष्यों को सिखाई है । जिसे मानवजाती हजारों सालों से अभ्यास तो कर रही है लेकिन हम मानव स्वयं को सर्वोच्च आध्यात्मिक अवस्था तक नहीं पहुँचा पायें है । इससे यह सिध्द होता है कि प्रचलित योग कि विविध पध्दतीयों मे कमीया है । इसी कारण आज सम्पुर्ण मानवजाती का उत्थान नहीं हो रहा है । तो योग की ऐसी कौनसी विधि है जिसे अपनाने से सम्पुर्ण मानवजाती का उत्थान एवं कल्याण हो सकता है । उस सर्वोच्च विधि को सिर्फ और सिर्फ एक परमपिता शिव परमात्मा जो कि स्वयं अशरीरी, अयोनिज, अभोक्ता एवं इस विश्व की सर्वोच्च आध्यात्मिक उर्जा है वही हमें सिखा सकते है जिसे भारत का प्राचिन राजयोग कहा जाता है । इस राजयोग का समय कल्प में सिर्फ एक ही बार होता है जिसमें हम आत्माएँ अपने **84** जन्मों का सौभाग्य बनाते है । जब संगमयुग का समय होता है, जो की कलियुग का अन्त और सतयुग की आदि होती है और जिस समय हम आत्माओं के परमपिता स्वयं परमात्मा शिवबाबा इस भारतभूमी पर **1936** में प्रजापिता ब्रह्माबाबा के साकार तन का माध्यम लेकर धरा पर पधारते है और स्वयं परमात्मा शिव यह राजयोग आत्माओं को सिखाते है जिससे आत्मायें अपनी खोई हुई समस्त शक्तियों और गुणों को पाकर अपने सर्वोच्च अध्यात्मिक स्थिती को प्राप्त करती है । योग एक ऐसी बात है, जिसमें आत्मा का सम्पुर्ण परिवर्तन होकर वह अपने मुल स्वरूप और स्थिती में आती है । योग जिसमें मुख्य बात है आत्मा का परमात्मा से बुध्दिद्वारा मिलन जिसे ही “राजयोग” कहा जाता है ।

तो राजयोग को अपने जीवन में अपनाने के लिए हमें आत्मा और परमात्मा की दैवी भूमिती को जानना होगा । इस योग की कॉमेंट्री में आपको आत्मा, परमात्मा, विश्व का सच्चा स्वरूप और योग में इस्तेमाल किये जानेवाले शब्दों के अर्थ का पता पडेगा और योग में प्रयोग किए जानेवाले स्वमान, वरदान, ड्रिल्स और मन्सासेवा की विधिओं का सम्पुर्ण visualization होगा जिससे आत्मा शिवपिता परमात्मा से प्राप्त सम्पुर्ण खजानों को अपने में भरकर जल्दी ही कर्मातीत अवस्था को प्राप्त कर लेगी ।

आत्मा की दैवी भूमितीय रचना / स्वरूप

आत्मा के गुण और शक्तियों के 16 उर्जा केद्रबिंदु और उससे संबंधित कुडलिनी के चक्र और तत्वों से संबंध कुछ इस प्रकार है ।

1. सुख (अग्नीतत्व, रूटचक्र) Yellow
2. प्रेम (वायुतत्व, सॅक्रल चक्र) Green
3. सत्यता (सोलर प्लेक्सस चक्र) White
4. दृढता (गोल्डन चक्र) White
5. नम्रता (लोअर हार्ट चक्र) White
6. सामना करने की शक्ति (मिडल हार्ट चक्र) Red
7. परखने की शक्ति (हायर हार्ट चक्र) Red
8. सहयोग की शक्ति (थ्रोट चक्र) Red
9. सहनशक्ति (माऊथ चक्र) Red
10. शान्ति (आकाश तत्व, सेन्सस चक्र) Blue
11. पवित्रता (जल तत्व, थर्ड आय चक्र) Orange
12. शक्ति (पृथ्वी तत्व, क्राऊन चक्र) Red
13. आनन्द (समेटने की शक्ति, संतुष्टता, फरिश्ता स्थिती, ॲस्ट्रल चक्र) Violet
14. विस्तार को संकीर्ण करने की शक्ति (सचेतन मन, कॉन्सीयस माईन्ड) Violet
15. समाने की शक्ति (अवचेतन मन, सबकॉन्सीयस माईन्ड) White
16. ज्ञान, निर्णयशक्ति (ईथर तत्व, बुध्दि, इन्टेलेक्ट) Indigo

आत्मा एक आध्यात्मिक उर्जा है और परमात्मा एक पराभौतिक सर्वोच्च शक्ति है । आत्मा का वर्णन ''भृकुटी के बीच चमकता है एक अजब सितारा'' इस तरह किया जाता है । इसीलिए आत्मा की दैवी भूमिती एक तारे (Star) समान है । हम आत्माओं की चैतन्यशक्ति (Consciousness) जैसे जैसे युगोप्रमाण इन उर्जा बिंदुओं से घुमती है उसी प्रमाण हमारी कुंडलिनी शक्ति का वहन शरीर के चक्र 13 से 1 तक होता है । सतयुग में हम आत्माओं के यह 16 उर्जाबिंदु पुरे चार्ज और सक्रिय रहते है । इसीलिए हम 16 कला सम्पन्न रहते है । और आत्माओं का Consciousness Field कमल के आकार जैसा फैला होता है । सतयुग में हम आत्माओं का Consciousness Point No. 13 में और कुंडलिनी शक्ति ॲस्ट्रल चक्र में रहती है । त्रेता में हमारी Consciousness Point No. 13 में आता है और 14 कला सम्पन्न बनते है । व्दापर में यह Point No. 8 पर आता है तो हम में 8 कला होती है । कलियुग की शुरूवात में यह Point No. 2 पर तो अन्त में Point No. 1 में आ जाता है और कुंडलिनी शक्ति मुलाधार चक्र में आकर बैठ जाती है । सतयुग, त्रेतायुग में हमारे बुध्दि (Point No. 16) का सुक्ष्म कनेक्शन सभी उर्जाबिंदुओं से रहता है । लेकिन जैसे जैसे समय बीतता

है तो हम आत्मायें अपने गुणों और शक्तियों को युज करते जाते है । लेकिन इन उर्जाबिंदुओं को चाजे नहीं करते । इसीलिए हम में निरन्तर गिरावट आती है । व्दापर युग में आत्मा की गुण और शक्तियाँ भारी मात्रा में नष्ट होने से हम में देहभान आना शुरू होता है और समय, बुध्दि का ॲस्ट्रल कनेक्शन सभी उर्जाबिंदुओं से टुटकर सबकॉन्सीयस माईन्ड और कॉन्सीयस माईन्ड का बुध्दि से सम्पर्क टुटता है और Point No. 16 बुध्दि में कृष्णविवर (BlackHole) कि निर्मिती होना शुरू होता है । जिसको परमात्मा गोडरेज का ताला कहते है । हम आत्माओं की पवित्रता की शक्ति कम होने से हमारी सुक्ष्म कर्मेन्द्रिया मन, बुध्दि, संस्कार ही हम आत्मा के Consciousness पर हावी होना शुरू करती है और यही हमारे शासनकर्ता बनना शुरू हो जाते है । परमपिता परमात्मा शिव व्दारा सिखायें गये राजयोग के निरन्तर अभ्यास से पुनः आत्मा स्वराज्य अधिकारी बन अपने सुक्ष्म कर्मेन्द्रियों को नियंत्रित कर उस पर अनुशासन करती है ।

परमात्मा शिव का दैवी भूमितीय स्वरूप / रचना

शिवपिता परमात्मा गुणों, शक्तियों और दिव्य कर्तव्यों के असीम अनंत भंडार है । शिवपिता के **32** उर्जाबिंदु है, जिनमें **14** गुण और **18** कर्तव्य है । शिवपिता परमात्मा के साथ परमधाम में उनके नीचे तीन आत्माओं के आकार में दिखायें गये शिवपिता परमात्मा के वह तीन उर्जा स्तर (एनर्जी लेवल्स) है न की कोई भिन्न आत्माएँ है । इन **3** उर्जा स्तरों को हम ड्रामा के मन, बुध्दि, संस्कार भी कह सकते है । यह उर्जास्तरों को परमात्मा शिव ड्रामा में स्थापना, पालना और विनाश के कार्य के लिए ब्रह्मा, विष्णु और शंकरव्दारा कार्य में लाते है । जैसे विष्णुरूप में लक्ष्मी - नारायण कम्बाइन्ड है वैसे ब्रह्मारूप में ब्रह्मा - सरस्वती और शंकररूप में शंकर - पार्वती कम्बाइन्ड है । परमात्मा की दैवी भूमिती में सबसे अन्दर उनको अंडाकृती आकार (ओव्हल शेप) में दिखाया गया है । जिसमें उनके मन, बुध्दि, संस्कार कम्बाइन्ड स्वरूप में है इसी कारण उनमें कोई संकल्प उत्पन्न नहीं होते इसीलिए वह स्टेबल कॉन्सीयसनेस कहलाते है । जब शिवपिता परमात्मा ब्रह्मा के साकार तन का आधार लेते है तभी वह उनके सारे गुण और कर्तव्यों को काये में लगा सकते है । इसीलिए शिवपिता परमात्मा के गुण और कर्तव्यों को स्थापना की उर्जा स्तर पर दिखाई गए है । यह सचमुच परमसत्य है कि शिवपिता परमात्मा गुण और कर्तव्यों में एक सागर के समान है । अगर हम आत्माएँ शिवपिता परमात्मा के साथ योग (याद) लगाते है तो हम भी उनके समान बन जाते है ।

ब्रह्माण्ड की दैवी भूमितीय स्वरूप / रचना

अगर ब्रह्माण्ड कि दैवी भूमितीय रचना का हमें सही ज्ञान हो जाए तो हमें परमात्मा से योग लगाना और मन्सा सेवा करना वहुत सहज हो जायेगा । ब्रहमाण्ड की दैवीभूमिती ट्रॅगल्स, कोन्स, ओव्हल्स, लाईन्स, सर्कल्स जैसी आकृतीयों से बनी हुई है । हर एक कोन या अन्तर के अंको की ॲडीशन करने से **3, 6, 9** यही अंक पाये जाते है । यह ब्रह्माण्ड कि दैवी भूमिती ईथर O9 के समान Nanohedron में दिखाई देती है । ब्रह्माण्ड के उर्जा स्तर (एनर्जी लेव्हल्स) कुछ इस प्रकार है । (नीचे से ऊपर तक यानी कम से ज्यादा तक)

1. पृथ्वी
2. जल

3. अग्नी
4. वायु
5. आकाश
6. धर्मपितायें और उनके धर्म की आत्माएँ
7. 108, 16108, 9 लाख, 33 कोटी देवात्माएँ
8. अष्टरत्नों की 14 आत्माएँ
9. अष्टरत्नों की 2 आत्माएँ
10. शिवबाबा पिता परमात्मा

ऊपर दी गयी 10 मुख्य उर्जा स्तर (एनर्जी लेव्हल्स) है लेकिन ब्रह्माण्ड में हर एक बिंदुपर अलग अलग एनर्जी है । भौतिक जगत में आकाश में पोलस्टार सबसे ऊपर और उसके नीचे सप्तर्षी तारे, 108 तारे, 16000 तारे, 9 लाख तारे, और उसके नीचे सुर्य और नवग्रह है । शिवपिता परमात्मा और उनकी स्थापना, पालना और विनाश की उर्जा स्तर के Consciousness Field को वर्तुलाकार रिती से दिखाया गया है । शिवबाबा ब्रह्माण्ड में दसवे मितिय स्थान में है जहॉंपर ब्रह्माण्ड के सभी बल एकत्रित होते है ।

शिवबाबा एक ही बिंदु में स्थिर है । लेकिन उनका कॉन्सीयसनेस फिल्ड घडी की दिशा में उर्घ्व (Vertical) रूप में निरन्तर घुमता रहता है । जिसके प्रभाव से ईथर O9 के माध्यम से परमधाम में आत्माएँ, तारामंडल और पृथ्वी का कोअर (गाभा) सदैव घडी की दिशा में घुमता रहता है । शिवपिता परमात्मा के कॉन्सीयसनेस फिल्ड से यह विश्व गतिमान और चलायमान है । इसलिए परमात्मा को हम प्राईम मुव्हर कह सकते है ।

राजयोग की विधि

हम आत्मा जो की सतयुग आदि में 16 कला सम्पुर्ण थी, वह कलियुग अन्त में कलाहीन हो गयी है । अब इसे पुनः सम्पुर्ण बनाने का एक मात्र उपाय है, परमात्मा शिवबाबा की याद माना राजयोग ।

जब हम आत्मा, शिवबाबा को याद करते है, तो उनकी शक्तिसम्पन्न लाइट और माइट हममें भरने लगती है । जैसे जैसे हम आत्मा अपने परमपिता शिवबाबा को याद करते है, वैसे वैसे हम पुनश्च अपने मुल स्वरूप और स्थिती में आने लगते है । पर इसमें मुख्य एक बात बुध्दि को गांठ बांध याद रखनी चाहिए की, हम पहले से ही विकर्म करते करते सम्पुर्ण पतित बन चुके है और अब जब हम अपने को पावन बनाने के मार्ग को शुरू कर चुके है तो हमें अपने उपर बहुत ध्यान देनी की बात है । क्योंकि एक तरफ हम आत्मा शिवबाबा की याद से अपना शुध्दीकरण करते जा रहे है तो दुसरी तरफ यह बात पक्की याद रहें की हमसे कोई विकर्म ना हो ।

हम ही हिसाब कर सकते है के शिवबाबा को सारे दिनभर में हमने कितना याद किया और फिर जो एनर्जी बाबा से हमने जमा की उसमें से हमने विकर्म कर कितनी नष्ट की और फिर बची कितनी । इस प्रकार हम बाबा के बच्चे बनें

तब से अब तक हमने कितना पाया, कितना खर्च किया और फिर अब तक कितना बचा ? जितना बचा है, क्या उससे हम स्वर्ग में महाराजा या महाराणी का पद पाने लायक है ।

बाबा कहते है बच्चे हमेशा याद रखना हिसाब तो अन्त में ही होगा जिसके बलबुतेपर तुम्हें तुम्हारा पद मिलेगा ।

इस राजयोग की विधि में हम आत्मा अपने 16 एनर्जी पॉइंटस् को सहज और सरल विधि से सम्पन्न और सम्पुर्ण बनाने वाले है ।

पहले पहल हम आत्मा का ओरिजिनल स्वरूप हमें ज्ञात होना चाहिए । और फिर हमारे परमप्रिय मोस्ट बिलवेड परमपिता परमात्मा शिवबाबा का भी ओरिजिनल स्वरूप हमें ज्ञात होना चाहिए ।

जिस कारण हम अपने ओरिजिनल स्वरूप में स्थित होकर अपने बाबा को उनके ओरिजिनल स्वरूप में याद कर सकेंगे और फिर यह जो राजयोग करेंगे जिससे बहोत ही कम समय में हम 16 कला सम्पन्न और सम्पुर्ण बन जायेंगे ।

हम आत्मा स्टारसमान एक ज्योतिर्बिंदु है, जिसमें की 16 एनर्जी पॉइंटस् है । यह जो 16 एनर्जी पॉइंटस् है उसमें मन बुध्दि संस्कार, पॉच तत्व, सभी गुण और सभी शक्तियॉ समाविष्ट है ।

हमारे परमप्रिय मोस्ट बिलवेड परमपिता परमात्मा शिवबाबा भी एक ज्योतिर्बिंदु है लेकिन उनका स्वरूप गोलाकार बिंदीसमान है, जिसमें की 32 एनर्जी पॉइंटस् है, जिनमें से अखण्ड, अगणित, विराट लाइट और माइट फैलती रहती है ।

हम जब योग करते है तो सबसे और अति महत्वपुर्ण है हमारा कॉन्सीयसनेस । हम जब जिस कॉन्सीयसनेस में होते है तब उसी प्रकार से हम में और हम से एनर्जी एक्सचेंज होती रहती है ।

सबसे पहले यह बात हम हमारे मन में पक्की कर लें की हम स्टारसमान एक ज्योतिर्बिंदु आत्मा है ।

अभी हम राजयोग की विधि शुरू करने जा रहे है ।

हम आत्मा स्टारसमान एक ज्योतिर्बिंदु है । हम अपने स्वरूप को बहोत सुक्ष्म रिती से देख रहे है । हम में 16 एनर्जी पॉइंटस् है । हम अपने सारे एनर्जी पॉइंटस् को ठिक से देख, निहार रहे है ।

पहले मुझ आत्मा का मुख्य एनर्जी पॉइंट बुध्दि 16 नं, जो कि नीले रंग की प्रकाशकिरणों से चमक रहा है । जो की सबसे महत्वपुर्ण पॉइंट है जो सेंटर में है, जो ईथरशक्ति का पॉइंट है, जो निर्णयशक्ति है । उसे मैं आत्मा देख रही हुं ।

अब 14 नं. का पॉइंट मेरा मन जो कि बैंगनी रंग की लाइट एनर्जी से चमक रहा है जो मेरे बुध्दि के बाये बाजु में है । जो की मेरी संकल्पशक्ति है, मेरी विस्तार को संकीर्ण करने की शक्ति है, उसे मैं आत्मा देख रही हुं ।

उसके बाद मुझ आत्मा के बुध्दि के दाये बाजु में 15 नं. का पॉइंट मेरे संस्कार का पॉइंट, जो समाने की शक्ति का पॉइंट है, जो की पवित्र सफेद रंग की किरणों से चमक रहा है । उसे मैं आत्मा देख रही हुं ।

अब मुझ आत्मा का **10** नं. का पॉइंट जो की सबसे ऊपर है उसे मै आत्मा निहार रही हुं । यह एनर्जी पॉइंट आसमानी रंग की प्रकाशकिरणों से चमक रहा है । यह पॉइंट पॉच तत्वों मे से आकाश तत्व का पॉइंट है । इस पॉइंट में शान्ति यह गुण समाया हुआ है । मैं आत्मा इसे देख रही हुं ।

इसके बाद मैं आत्मा मेरे **11** नं. के एनर्जी पॉइंट को देख रही हुं । यह पॉइंट पवित्रता की ऑरेंज रंग की किरणों से चमक रहा है । यह पॉइंट जल तत्व का पॉइंट है । मैं आत्मा इसे निहार रही हुं ।

अब मैं आत्मा **1** नं. के मेरे सुख के पॉइंट को देख रही हुं जो पीले रंग की प्रकाशकिरणों से चमक रहा है । यह पॉइंट अग्नी तत्व का पॉइंट है । जिसे मैं आत्मा देख रही हुं ।

उसके बाद मैं आत्मा **2** नं. के पॉइंट को देख रही हुं जो हरे रंग की प्रकाशकिरणों से चमक रहा है, जो वायु तत्व का और प्रेम का पॉइंट है । मैं आत्मा इसे निहार रही हुं ।

इसके बाद मेरे लाल रंग की प्रकाशकिरणों से चमकते **12** नं. के पॉइंट को मै आत्मा देख रही हुं, जो की पृथ्वी तत्व और शक्ति का पॉइंट है । इसे मैं देख रही हुं ।

अब मैं आत्मा मेरे **9** नं. की पॉइंट को देख रही हुं, जो की सहनशक्ति का पॉइंट है, जो शक्ति के लाल रंग की प्रकाशकिरणों से चमक रहा है । इसे मैं आत्मा निहार रही हुं ।

इसके बाद मैं आत्मा शक्ति की प्रकाशकिरणों से चमकते हुए मेरे **7** नं. के पॉइंट को देख रही हुं, जो की परखने की शक्ति का पॉइंट है । इसे मैं आत्मा निहार रही हुं ।

अब मैं आत्मा मेरे **5** नं. के सफेद रंग से चमकते हुए अन्तर्मुखता इस गुण के पॉइंट को देख रही हुं । मैं आत्मा इसे निहार रही हुं ।

उसके बाद मैं आत्मा मेरे **3** नं. के पॉइंट को देख रही हुं जो सफेद रंग की प्रकाशकिरणों से चमक रहा है, जो की दृढता इस गुण का पॉइंट है । मैं आत्मा उसे निहार रही हुं ।

अब मैं आत्मा **4** नं. के पॉइंट को देख रही हुं, जो की नम्रता इस गुण का पॉइंट है । जो सफेद रंग की प्रकाशकिरणों से चमक रहा है । मैं आत्मा इसे देख रही हुं ।

अब मैं आत्मा मेरे **6** नं. के पॉइंट को देख रही हुं, जो शक्ति के लाल रंग की प्रकाशकिरणों से चमक रहा है, और जो सामना करने की शक्ति का पॉइंट है । उसे मैं आत्मा देख रही हुं ।

इसके बाद मुझ आत्मा का **8** नं. का पॉइंट जो की शक्ति की लाल रंग की प्रकाशकिरणों से चमक रहा है, जो सहयोग शक्ति का पॉइंट है, उसे मैं आत्मा निहार रही हुं ।

अब मुझ आत्मा का अंतिम एनर्जी पॉइंट, जो कि मेरी सर्वोच्च स्थिती का पॉइंट हैं, **13** नं. का पॉइंट, जो बैंगनी रंग कि प्रकाशकिरणों से चमक रहा है, मेरी समेटने कि शक्ति का पॉइंट, आनन्द का पॉइंट और मेरी सर्वोच्च स्थिती फरिश्तास्वरूप का पॉइंट है, उसे मैं आत्मा निहार रही हुं ।

इस प्रकार यह मुझ आत्मा का स्वरूप है । मुझसे गुण एवं शक्तियों की रंगबिरंगी किरणे चारों ओर फैल रही है ।

अब मैं आत्मा अपने कॉन्सीयसनेस के द्वारा अपने पारलौकिक घर परमधाम में पहुंच गयी हुं । यहॉं चारों ओर सुनहरे लाल रंग का प्रकाश है और गहन शान्ति है ।

यहॉं मैं अपने परमप्रिय परमपिता परम आत्मा शिवबाबा को मेरे सम्मुख देख रही हुं । उनका स्वरूप गोलाकार बिंदीसमान है जिसमें उनके बाहर **32** पॉइंटस् है, जिनमें से ज्ञान, गुण, शक्तियों के किरणों की ज्वालायें विराट रूप में और बहोत ही तेजी से चारों ओर फैल रही है । मैं आत्मा अपने परमप्रिय परमपिता का यह स्वरूप देखकर धन्य हो गयी हुं । मेरे बाबा सारे ज्ञान, गुण और शक्तियों का भण्डार है । मुझ आत्मा को अपने परमपिता के साथ अपने घर परमधाम में सम्पन्न और सम्पुर्णता का अनुभव हो रहा है ।

अब मैं मेरे परमशिक्षक शिवबाबा से निकलती हुई ज्ञान की गहरी नीली किरणों को मेरे बुध्दि के **16** नं. के पॉइंट में केंद्रीत होकर समाती हुई देख रही हुं । यह किरणे मेरे बुध्दि के पॉइंट के अन्दर ज्ञान के नीले क्षेत्र को आलोकित कर रही है, बुध्दि के अन्दर बने हुए सभी ब्लॅकहोल्स नष्ट होते जा रहे है । बुध्दि सम्पुर्णता स्वच्छ होकर दिव्य बनती जा रही है, जिससे आत्मा, परमात्मा व सृष्टिचक्र का सम्पुर्ण ज्ञान स्पष्ट होता जा रहा है, बुध्दि बीजसमान सम्पन्न बनती जा रही है । ज्ञान के भिन्न भिन्न, गुहय राज बुध्दि के अन्दर स्पष्ट होते जा रहे है । जिससे मैं आत्मा मास्टर त्रिकालदर्शी, मास्टर त्रिलोकीनाथ, मास्टर बीजस्वरूप, मास्टर ज्ञानसुर्य बन गयी हुं । मैं आत्मा ज्ञान से, ई थरशक्ति से और निर्णयशक्ति से सम्पन्न बनती जा रही हुं ।

अब मैं आत्मा, शिवबाबा से निकलती हुई बैंगनी रंग की किरणों को मुझ आत्मा के **14** नं. के पॉइंट मेरे मन में समाती हुई देख रही हुं । यह किरणे मेरे मन में सम्पुर्णता समा रही है । जिससे मेरा मन बहोत ही शक्तिशाली बनकर, मैं आत्मा भय, कामवासना, ईर्ष्या, व्देष और तनाव के भाव से मुक्त हो रही हुं । मुझ आत्मा की विस्तार को संकीर्ण करने की शक्ति पुनश्च सम्पुर्ण होती जा रही है । और मेरे मन में शुध्द, पवित्र, कल्याणकारी और शक्तिशाली संकल्प उत्पन्न होने लगे है ।

अब मैं आत्मा, पवित्रता के महासागर शिवबाबा से निकलती हुई पवित्रता की सफेद रंग की किरणों को मुझ आत्मा के **15** नं. के पॉइंट, संस्कार में समाती हुई देख रही हुं । इन पवित्रता की सफेद किरणों से मेरे सभी संस्कार सम्पुर्ण पवित्र होते जा रहे है, मुझ आत्मा में सतयुगी संस्कार ईमर्ज होते जा रहे है । मेरी समाने की शक्ति भी फिर से सम्पन्न और सम्पुर्ण होती जा रही है ।

अब मैं आत्मा, शिवबाबा परम मॉं से निकलती हुई शान्ति की आसमानी रंग की किरणों को मेरे पॉइंट नं. **10** में, आकाश तत्व और शान्ति के पॉइंट में समाती हुई देख रही हुं । यह किरणे इस पॉइंट के अन्दर शान्ति के क्षेत्र को आलोकित कर रही है । शान्ति की किरणों से आकाश तत्व शान्त, पावन एवं क्रियाशील बनता जा रहा है । मैं आत्मा

परमशान्ति की अनुभुती कर रही हुं, पॉचो विकार समाप्त होते जा रहे है, मैं आत्मा शान्ति की किरणों से निर्विकारी बनती जा रही हुँ, मैं आत्मा अपने को स्वराज्य अधिकारी अनुभव कर रही हुं । मैं आत्मा अब निर्बन्धन शान्ति का अनुभव कर रही हुँ ।

मैं आत्मा अब, परमसद्‌गुरू शिवबाबा से निकलती हुई पवित्रता की नारंगी ऑरेंज रंग की किरणे मेरे पवित्रता के और जल तत्व के पॉइंट नं. **11** को प्रकाशित कर रही है । जिससे विश्व का सम्पुर्ण जलतत्व शुध्द, सशक्त और क्रियाशील होता जा रहा है । मैं आत्मा पवित्रता की शक्ति से स्वयं को सम्पन्न अनुभव कर रही हुं । इन पवित्रता कि किरणों से ब्रह्मचर्य की शक्ति में वृदधी हो रही है । और मैं आत्मा मनसा, वाचा, कर्मणा सम्पुर्ण पवित्र बनती जा रही हुं ।

अब, शिवबाबा सखा से निकलती हुई अतिन्द्रीय सुख की पीले रंग की किरणे मेरे सुख के और अग्नी तत्व के पॉइंट नं. **1** के क्षेत्र को आलोकीत कर रही है । इन सुख की किरणों से सम्पुर्ण विश्व का अग्नी तत्व पावन, सशक्त एवं क्रियाशील बनता जा रहा है । मैं आत्मा हल्कापन अनुभव कर रही हुं । मैं आत्मा अतिन्द्रीय सुख के झुले में झुल रही हुं और सर्व सुखों से सम्पन्न होती जा रही हुं ।

अब मैं आत्मा, शिवसाजन से निकलती हुई आत्मिक प्रेम की हरे रंग की किरणों को मेरे प्रेम के और वायु तत्व के पॉइंट नं. **2** में समाती हुई देख रही हुं । प्रेम की इन किरणों से प्रकृति का वायुतत्व पवित्र एवं क्रियाशील बनता जा रहा है । यह हरे रंग की किरणे मेरे प्रेम के पॉइंट के क्षेत्र को सम्पुर्ण आलोकीत कर रही है जिससे मै आत्मा निर्मोही बन रही हुं, मोह समाप्त होता जा रहा है और मैं आत्मा प्रेम की इन किरणों से सम्पन्न होकर प्रेमस्वरूप बन गयी हुं ।

अब सर्वशक्तिवान शिवबाबा से निकलती हुई शक्तियों की लाल किरणे मेरे शक्ति के और पृथ्वी तत्व के पॉइंट नं. **12** को भरपूर कर रही है । इससे सम्पुर्ण विश्व का पृथ्वी तत्व पावन, क्रियाशील बनता जा रहा है । मैं आत्मा शक्तियों से सम्पन्न होती जा रही हुं । मैं आत्मा स्वयं को मास्टर सर्वशक्तिवान अनुभव कर शक्तिस्वरूप बन रही हुं ।

अब मैं आत्मा, सर्वशक्तियों के महासागर शिवबाबा से निकलती हुई शक्तियों की लाल रंग की किरणे मेरे सहनशक्ति के पॉइंट नं. **9** में समाती हुई देख रही हुं । इन शक्ति की किरणों से मेरी सहनशक्ति सम्पुर्णता बढती जा रही है । और मैं आत्मा सहनशक्ति से सम्पन्न होती जा रही हुं ।

अब मैं आत्मा, सर्वशक्तिवान शिवबाबा से निकलती हुई शक्तियों की लाल रंग की किरणे मेरे परखने की शक्ति के पॉइंट नं. **7** पर केंद्रीत होकर समाती हुई देख रही हुं । इन शक्ति की किरणों से मेरी परखने की शक्ति बढती जा रही है, जिससे मैं आत्मा हर समय हर बात को परखने में सम्पन्न बनती जा रही हुं । और मैं आत्मा परखने की शक्ति से सम्पन्न और सम्पुर्ण बनती जा रही हुं ।

अब मैं आत्मा, शिवबाबा से निकलती हुई सर्वगुण सम्पन्न, पवित्र सफेद रंग की किरणों को मेरे अन्तर्मुखता इस गुण के पॉइंट नं. **5** में समाती हुई देख रही हुं । इन किरणों से मैं आत्मा अन्तर्मुखी बनती जा रही हुं और मैं आत्मा अन्तर्मुखता इस गुण से सम्पन्न होती जा रही हुं ।

अब मैं आत्मा, शिवबाबा से निकलती हुई पवित्र सफेद रंग की किरणों को मेरे दृढता इस गुण के पॉइंट नं. **3** पर केंद्रीत होकर उसमें समाती हुई देख रही हुं । इन किरणों से दृढता का पॉइंट सम्पुर्ण भरपूर होता जा रहा है । और मैं आत्मा दृढता सम्पन्न बनती जा रही हुं ।

अब मैं आत्मा, शिवबाबा से निकलती हुई सर्वगुण सम्पन्न पवित्र सफेद रंग की किरणों को मेरे नम्रता इस गुण के पॉइंट नं. **4** में समाती हुई देख रही हुं । इन किरणों से मेरा नम्रता इस गुण का पॉइंट भरपूर होता जा रहा है । जिससे मैं आत्मा नम्रता इस गुण से सम्पन्न और सम्पुर्ण होती जा रही हुं ।

अब मैं आत्मा, सर्वशक्तियों के भण्डार शिवबाबा से निकलती हुई शक्तियों की लाल रंग की किरणे मेरे सामना करने की शक्ति के पॉइंट नं. **6** में समा रही है । इन किरणो से मेरी सामना करने की शक्ति बढती जा रही है । मैं आत्मा शक्तिशाली बनती जा रही हुं । और मैं आत्मा सामना करने की शक्ति से सम्पन्न बनती जा रही हुं ।

अब मैं आत्मा सर्वशक्तिवान, सर्वशक्तियों के महासागर शिवबाबा से निकलती हुई शक्तियों की लाल रंग की किरणो को मेरे सहयोग शक्ति के पॉइंट नं. **8** में समाती हुई देख रही हुं । इससे मुझ आत्मा की सहयोग की शक्ति बढती जा रही है, मैं आत्मा हर समय सभी को सहयोग देने में निमित्त बनती जा रही हुं । मैं आत्मा सहयोग की शक्ति से सम्पुर्ण बनती जा रही हुं ।

अब मुझ आत्मा का अंतिम एनर्जी पॉइंट जो कि मेरी सर्वोच्च स्थिती का पॉइंट हैं, पॉइंट नं.**13**, जो मेरी आनन्द का, फरिश्तास्वरूप का और समेटने की शक्ति का पॉइंट है इस पर शिव परमात्मा से बालक के रूप में आनन्द की बैंगनी रंग की किरणे केंद्रीत होकर समा रही है । इन किरणो से मैं आत्मा आनन्द से भरपूर होकर परमानंद का अनुभव कर रही हुं । मेरी समेटने की शक्ति भरपूर हो रही है । मैं अपनी सर्वोच्च स्थिती फरिश्ता स्वरूप का अनुभव कर रही हुं । और मैं आत्मा आनन्दस्वरूप बन गयी हुं ।

इस प्रकार मैं आत्मा परमपिता शिवबाबा से सर्व गुणों और सर्व शक्तियों से सम्पन्न होकर साकार लोक में पहुंच कर अपने भृकुटी में विराजमान हो रही हुं । मैं आत्मा स्वयं को सर्व गुणों और सर्व शक्तियों से सम्पन्न अनुभव कर रही हुं । मैं आत्मा मन्सा, वाचा, कर्मणा ब्रह्माबापसमान बन गयी हुं ।

ओम शान्ति......

ब्रह्माण्ड के सभी तत्वों को शुध्द करने के लिए बिजरूप स्थिती

यह योग की सबसे शक्तिशाली स्थिती है । हमें बिजरूप स्थिती का अनुभव करने के लिए परमधाम में स्थित होना पडेगा । शिवबाबा दसवे और मम्मा बाबा नववे उर्जा स्तरो में है । अगर हम यह तीनों बिंदीओं को सरल रेखा से जोडेंगे हमें एक त्रिकोण मिलेगा । शिवबाबा से एक सिधि रेखा निकालेंगे जो की मम्माबाबा को जोडनेवाले पॉइंट की रेखा को एक बिंदु में मध्य में छुती है, इसी बिंदु पर हम आत्मा को आकर बैठना है क्युंकी इस बिंदु में हमें शिवबावा, मम्माबावा की एनर्जी प्राप्त होती है । इसी कारण यह योग में शक्ति प्राप्त होने का सर्वोच्च उर्जा बिंदु है । इसीलिए हमें योग में बार बार इसी उर्जाबिंदु में स्थित होना है जिससे हम जल्दी ही बिजरूप स्थिती को प्राप्त कर सकते है ।

यह बिंदु से सारे भौतिक जगत को हम अति शक्तिशाली किरणे दे सकते है इसीलिए यह मन्सा सेवा के लिए भी सर्वोच्च स्थान है । अगर कोई आत्मा **2** दिन (**48** घंटा) तक इसी स्थान पर स्थित रहेगी तो उस आत्मा का भौतिक शरीर तिसरे दिन ही छुट जायेगा और वह आत्मा फरिश्ता बन उड जायेगी ।

पॉच स्वरूप और पॉच धाम की अनोखी ड्रिल ः

हम योगी आत्माएँ पॉच स्वरूपों की ड्रिल हमेशा करते है । और बाबा हमें चार धामों की यात्रा करने को भी कहते है । तो अभी हम ऐसी अनोखी ड्रिल सिखेंगे जिसमें स्वरूप और धामों की यात्रा साथ साथ कर डवल कमाई करेंगे । तो कम समय में हम ज्यादा से ज्यादा कमाई कर सकते है हमारे पॉचो स्वरूपों में आत्मा, देवता, पुज्यनिय, ब्राह्मण, फरिश्ता है और चारों धामों में हिस्ट्री हॉल, बाबा की कुटीया, बाबा का कमरा और शान्तिस्तंभ है । चारों धामों का महत्व बहुत है क्युँकि भौतिक जगत में स्वयं ब्रह्माण्ड की सर्वोच्च सत्ता परमपिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्माबाबा के साकार तन में यहॉ बहुत काल के लिए वास्तव्य किया है । इसीलिए चारों स्थान परमात्मा के अतिप्रचंड उर्जा से चार्ज है । इसीलिए यहॉ पर जब आत्मा योगाभ्यास में बार बार आती है तब उसमें परमात्मा की अतिप्रचंड उर्जा प्रवाहित होती है और आत्मा शक्तिशाली बनती जाती है । अगर हम इन चारों धामों में परमधाम को जोड दे तो वह पॉचो धाम हो जायेंगे । तो आत्मा को अधिक शक्तिशाली बनाने के लिए पॉच स्वरूप और पॉच धाम की यात्रा साथ साथ करेंगे ।

1 ः मैं आत्मा परमधाम में शिवबाबा के सम्मुख रह उनसे आत्मा के **16** उर्जाबिंदुओं को पुर्णतः चार्ज कर रही हुं । मै आत्मा सम्पुर्णतः चार्ज होकर बाबा के समान मास्टर ज्ञानसुर्य बन सारे विश्व का अज्ञान अंधकार मिटा रही हुं ।

2 ः मैं आत्मा विष्णु चतुर्भुज के देवतास्वरूप में हिस्ट्री हॉल में बापदादा के सम्मुख हुं । बापदादा मुझ देवता को ज्ञानरूपी गदा, योगरूपी चक्र, सेवारूपी शंख और धारणारूपी कमलपुष्प प्रदान कर रहे है । मैं देवता **16** कला सम्पन्न, सम्पुर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरूषोत्तम और डबल अहिंसक बन गया हुं ।

3 ः मैं आत्मा विघ्नविनाशक गणेश या अष्टभुजाधारी दुर्गा के पुज्यनिय स्वरूप में बापदादा के सम्मुख बाबा की झोपडी में हुं । इसी पुज्यनिय स्वरूप में मैं आत्मा सारे विश्व का कल्याण कर रहा हुं । इन्हीं स्वरूपों में मेरे जड चित्रों की और मूर्तियों के रूप में घरों और मंदिरों में पूजा हो रही है ।

4 ः मै आत्मा ब्रह्माबापसमान परमपवित्र ब्राह्मण बापदादा के सम्मुख कमलआसन पर बाबा के कमरे में बैठा हुं । बाबा ने मुझे त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, त्रिलोकीनाथ बना दिया है । मैं ब्राह्मण आत्मा ब्रह्माबापसमान बन सारे विश्व का कल्याण कर रही हुं ।

5 ः मैं आत्मा ब्रह्माबापसमान पवित्रता का फरिश्ता बन बापदादा के सम्मुख शान्तिस्तंभ के पास खडा हुं । मैं पवित्रता का फरिश्ता बापदादा का हाथ पकडकर सारे विश्व की सैर करते सारे विश्व में पवित्रता, सुख, शान्ति, आनन्द, प्रेम की लाईट और माईट सारे संसार को दे रहा हुं ।

अन्त में फरिश्ता बन सुक्ष्म वतन में पहुँच जाये और वहॉ पर अपना लाईट का ड्रेस उतारकर सिर्फ आत्मबिंदी बन परमधाम में शिवबाबा के सम्मुख पहुँच जाये I इससे पॉचों स्वरूपों व्दारा पॉचों धामों की यात्रा का एक चक्र पुर्ण हो जायेगा I कम से कम यह चक्र **21** बार घुमाइए तो अपने पॉचों स्वरूप बहुत जल्दी स्पष्ट हो जायेंगे I पूरे दिन की दिनचर्या में हम आत्मा दिखाए गए चार्ट के स्वरूपों अनुसार स्वयं को अनुभव करेगें तो योग में बहुत सुंदर अनुभव होगें I अब समय भी अपनी अंतिम घडीयॉ गिन रहा है I तो अब इस लास्ट ॲण्ड फायनल समय को सफल कर अब भी हम सर्वोच्च पद की प्राप्ती कर सकते है I यह एक जन्म की बात नहीं कल्प का सौभाग्य बनाने का लास्ट ॲण्ड फायनल समय और चान्स है I अभी नहीं तो याद रखना हर कल्प नहीं......

ओम शान्ति......